To
The Board of Studies,
S.D.Mahila Mahavidyalya,
Narwana.

Sub: Approval for "हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी" Certificate course..

Respected Madam,

We want to start a certified offline course "**हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी**"(30 Hours) in our campus. A Certificate is an education goal for many students who want to improve their visibility among aggressive job applications. Certificates may help to provide students with increased skills and experience. Syllabus of "**हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी**"is attached with this application. Please kindly approve this certified course. We shall be thankful to you for this.

Enclosed: Syllabus of the Certificate Course.

Yours Faithfully

Dr.Anita Chhabra
Asstt. Prof. of Hindi.

Ms.Kanta Jaglan
Asstt. Prof. of Hindi

Principal
S.D. Mahila Mahavidyalya
Narwana

.....

Dr.Anita Chhabra
Asst. Prof. of Hindi

Ms. Kanta Jaglan
Asst. Prof. of Hindi

Subject: Approval for "हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी" by the Board of Studies

Dear Ms. Nisha & Mahak,

I am pleased to inform you that after careful consideration and review by the Board of Studies, has approved "हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी" which spans over 30+ hours of instruction.

This course has been evaluated thoroughly to ensure its alignment with our institution's academic standards and objectives. We believe that it will significantly contribute to the academic enrichment of our students and align with our commitment to providing high-quality education.

Thank you for your interest and support in our academic endeavors.

Yours sincerely,

Dr. Navandeep
Assoc. Prof. in Eco.
Convener

Dr. Anita Chhabra
Asst. Prof. in Hindi
Member

Dr. Shallu Sachdeva
Asst. Prof. in Hist.
Member

Suman Garg
Asst. Prof. in Eng.
Member

Nisha
Asst. Prof. in Physics
Member

Principal
S.D. Mahila Mahavidyalaya
Narwana

सनातन धर्म महिला महाविद्यालय
नरवाना (जींद)

के

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

सर्टिफिकेट कोर्स

हरियाणवी संस्कृति में सांग लोकगीत एवं रागनी

प्रमाणपत्र: कोर्स समापन पर सफलतापूर्वक प्राप्त प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।

दिनांक - 05-04 -2022

कोर्स की अवधि -30 घण्टे

डॉ अनीता छाबड़ा	सुश्री कांता जागलान	डॉ अंजना लोहान
संयोजिका	सह -संयोजिका	प्राचार्या

E-mail : sdmmnrw@gmail.com
www. sdmmnarwana.com
01684 240161
241933

S.D. Mahila Mahavidyalya

Narwana - 126116 (Jind) Haryana
Accredited by NAAC with Grade 'B'
Affiliated to Ch. Ranbir Singh University, Jind

Sr. No.

Dated 21.04.2022.....

B.A. की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि हिन्दी विभाग द्वारा 30 घंटे का सर्टिफिकेट कोर्स करवाया जाएगा। जिसका विषय "हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी" है। यह कोर्स 05/04/22 से 24/04/22 तक रहेगा। इच्छुक छात्राएँ कांता जागलान के पास नाम लिखवाएँ।

Principal
S.D. Mahila Mahavidyalya
Narwana

Certificate Course

विषय :- हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी

समयावधि : 30 घंटे

Unit-1

सांग विधा, सांग लोकनाट्य

Unit 2

हरियाणा के प्रमुख सांगी, हरियाणा की सांग रचनाएँ

Unit 3

रागनी, रागनी के प्रकार

Unit 4

लोकगीत, लोक गीतों का महत्व

लोक विधा के उद्देश्य एवं महत्व:-

- भविष्य में रोजगार में सहायक।
- बच्चों मे लोक कला एवं कौशल का विकास ।
- मानसिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास ।
- लोक नाट्य सांग विधा का संरक्षण एवं विकास।
- जीवन मूल्यों की जानकारी देना ।

S.D. MAHILA MAHAVIDYALYA, NARWANA

PARTICIPANT ATTENDANCE SHEET - B.A.

FROM 05.04.22 TO 24.04.22

हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी — हिंदी विभाग

Sr.No.	Student Name	College Roll No.	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
1	ANJU	3288220097	P	P	P	P	P	SA	P	P	P	P	P	P	SA	P	P	P	P	P	P	Anju
2	JYOTI	63	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	SS	P	P	P	P	P	P	Jyoti
3	REENU	69	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Reenu
4	POOJA	64	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Pooja
5	MONIKA	9	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Monika
6	POOJA	158	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Pooja
7	RITU	161	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Ritu
8	ANKITA	160	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Ankita
9	MONIKA	247	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Monika
10	PREETI	248	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Preeti
11	MANJEET	65	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Manjeet
12	SONIA	140	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Sonia
13	MANU	198	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Manu
14	MANJEET	176	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Manjeet
15	KUSUM	257	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Kusum
16	POONAM	187	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Poonam
17	MAMTA	29	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Mamta
18	AMAN	19	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Aman
19	SUMAN	233	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Suman
20	PREETI	2	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Preeti
21	KHUSBHU	57	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Khushbu
22	MANISHA	220	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Manisha
23	POOJA	6	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Pooja
24	NEHA	38	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Neha
25	MANISHA	225	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Manisha
26	MONIKA	5	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Monika
27	PARVEEN	25	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Parveen
28	NISHA	90	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Nisha
29	AARTI	120	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Aarti
30	DIVYA	173	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	S	P	P	P	P	P	P	Divya

हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनीसमयावधि

M.M. 50

1 ½ घण्टे

सत्र 2022-23

1 सांग विधा का सांस्कृतिक महत्व बताए?

2 हरियाणा के प्रमुख सांगियों का परिचय दे?

3 सांग का प्राचीन इतिहास बताएँ ।

10 x 3 = 30

4 हरियाणा के साग मंचन पर प्रकाश डाले ।

5 हरियाणा के प्रमुख लोक गीतों का वर्णन करे?

6 पण्डित लखमी चंद के दो सांग का वर्णन करो।

7 मांगे राम के दो सांगो का वर्णन करे ।

5 x 4 = 20

S.D. MAHILA MAHAVIDYALYA, NARWANA

Roll No. 3288220840 Class B.A.II Sec. .... Subject हरियाणवी संस्कृति में सांग लोक संगीत व रागनी

Date 24/5/22 Signature ....

(1) सांग विधा की परम्परा :
उत्सव के आधार पर भारतीय समाज मे अनेक में से हरियाणवी व उत्तरप्रदेश भाषा की एक प्रसिद्ध लोक कला है। सांस्कृतिक व धार्मिक लोक कलाऐं प्रचलित है सांग भी उनकी कलाओं मे एक है। जो हरियाणवी व उत्तरप्रदेश ही नही उनके समीपवर्ती क्षेत्रों मे भी लोकप्रियता के साथ प्रचलित है सांग एक रचना संगीत और नृत्य का अनूठा कला संगम है। जिस तरह श्रावण मास की समीत और फाल्गुन मौसम की महक जनमानस मे तरंगे पैदा करती है ठीक उसी तरह सांग का संगीत भी मन और आत्मा पैदा करता है। इस विधा मे सांग और रागिनी कला को अभिव्यक्ति होने के साथ-साथ जनसमुदाय का एक मनोरंजन का साधन भी है।

समाज के किसी भी वर्ग मे चाहे धनी हो या कंगाल, उच्च फकीर सभी वर्ग वो सांग मंच को मार्गदर्शक मानकर समानभूती का रसपान करते है।

मूल रूप से सांग, शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है स्वांग भरना यह एक लोकनाट्य के

रूप मे बहुत है पारम्परिक विधा है जिसने लोकनाटकारो के मंथन द्वारा प्रचलित धार्मिक, सामाजिक, पौराणिक अथवा सामान्य -सी लोक-कथा को माध्यम बनाकर लोककानियो मे बेहद खूबसूरत अंदाज मे उपदेशक नैतिक मनोरंजन एवं जीवन मूल्यो की अनमोल प्रस्तुति दिखाई जाती है।

सांग संगीत की पात्रो मे चयन उनके गायन की क्षमता आधार पर किया गया है और प्रत्येक पात्र को गायन काल की शिक्षा दी जाती है।

सांग स्वांग विधा से स्वरूप एवं किया गया है स्वांग परामपरागत तरीके के नाटक की क्रांति मंच पर आधारित किया गया है तथा संवाद के अंतर्गत भी सभी स्त्री पात्रो की भूमिका पुरुषो की द्वारा निभाई जाती है।

08

(2) हम देशी भाषा मे हम साँग कहते है लेकिन हिन्दी मे सांग को स्वाँग कहा जाता है जिसका अर्थ होता है व्यक्तिगत रूप से यह किसी या अन्य किसी रूप से नकल करना । नाटक करना है। हरियाणा मे सबसे प्रचलित है और हरियाणा के साथ - साथ भजन सांग राजस्थान वह उत्तरप्रदेश मे भी काफी प्रचलित है हरियाणा मे सबसे बड़ा स्वांगी अगर हम किसी को कह सकते है तो वह है पंडित लखमीचन्द इनमे मे हरियाणा के सूर्य कवि कहा जाता है और इन्हे सांग सम्राट आदि भी कहा जाता है, ये हरियाणा मे प्रसिद्ध माना जाता है।

इस प्रकार से गोवर्धन सारस्वता के स्वाँग है। कृष्ण लीला, सितारा, महाभारत बसंत सिंह ये ही बजाते है।

6

(3) सांग जिसे स्वांग या स्वांग के नाम से भी जाना जाता है। राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के अलावा क्षेत्र मे एक लोकप्रिय है। स्वांग मे गीत और संवाद के साथ-साथ, उपयुक्त नाटकियता और नकल भी शामिल है यह आंदोलन-उन्मुख के बजाय संवाद-उन्मुख है धार्मिक कहानियाँ और लोक कथाएँ दस या बारह व्यक्तियों के एक समूह द्वारा एक खुले क्षेत्र मे या दर्शकों मे घिरे एक ओपन सवांग अर्थ है रंग-भरना, नकल-करना।

स्वांग को भारत का सबसे प्राचीन लोक नाट्य रूप माना जा सकता है नौटंकी, सांग तमाशा की उत्पत्ति स्वांग परंपरा की हुई सकता है पुरानी स्वांग परंपराएँ।

इसका मतलब है कि एक सारंगी वादक और एक ढोलक वादक प्रदर्शन मे शामिल होते है. यह स्वांग प्रदर्शन एव कबीर संत और गुरु नानक के समय सक्रिया था।

(5) हिराय
मान
बना
है
क

(4) हिरयाणा में लोक मंच को स्वांग के समान माना है 'सांग' शब्द स्वांग शब्द से बना है। सांग हरियाणा की सांस्कृतिक के जीवन का दर्पण है। यहां के पर्याय है के सांग हिरयाणा की सांस्कृति के जीवन का दर्पण है। यहाँ के निवासियों के सामाजिक और नैतिक मूल्य, लोक, जीवन से जुड़ी वीरता और प्रेम की कहानियाँ, खेत-खलिहान, दान-पुण्य और आतिथ्य सत्कार के भाव अभिव्यक्त करता है। सांग-संगीत, और नृत्य का कला का करता है।

(5) 18 वीं शताब्दी से पूर्व सामूहिक मनोरंजन के दो साधन थे - मजुरा और नकल। सम्पन्न परिवारों में विवाह आदि के अवसर पर था। कार्यक्रम होता है मजुरे के लिए नृत्यंगारें आती थी और नकल के लिए नकलिए व नवकालों को बुलाया जाता है वो अपने-अपने तरीकों से नृत्यांगनाओं व नकलों को हेय की दृष्टि से देखा जाता है

(5) लोकगीत वे गीत हैं जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि उस संस्कृति का पूरा लोक समाज अपनाया है। सामान्यत: लोक में प्रचलित है। लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है।

हरियाणा में हर मौके पर अलग-अलग तरह के लोकगीत गाये जाते हैं जैसे कि, बच्चे के जन्म पर और उनी पर, विवाह में, बच्चे के जन्म में सावन में, तीज पर खेतों में काम करते हुए पनघट पर, बड़ों की मृत्यु पर इत्यादि। SukRaj Classes की टीम में यहाँ कुछ प्रसिद्ध लोक गीत का विवरण, हरियाणा में होने वाले परीक्षाओं के आधार पर संकलित है—

यह संस्कृति का पूरा लोक समाज का रूप है लोक गीत में संकलित है यह रचित एवं लोक के लिए लिखे जाते है।

(6)

(6) हरियाणा के कलाकार प्रेम से उन्हें द्वारा दादा लखमीचन्द कहते है। लखमीचंद ने त्याग के पर्याय कहे जाने वाले राजा हरिशचन्द्र पर रागनियों को किस्से के तौर पर पिरोया है और उन पर रागनियों की रचना की और गाया। इसके अलावा उन्होंने भारत मे वर्णित नल दमयंती के किस्से को भी रागनी के जरिए जन-जन तक पहुंचाया। यहीं नही भारतीय पौराणीक साहित्य मे अहम स्थान रखने वाले सत्यवान और सावित्री के प्रेम की कहानी है।

पंडित लखमीचंद की रागनियां और सांग खास संवादपदक है आम लोगों तक इन्होने छाप छोड़ी है वह वास्तव मे शोप का विषय है। किस प्रकार एक लोक कला जन-2 के कठ मे बस जाती है इसका लखमीचन्द की रचनाएं आमतम उदाहरण है उनकी संवादपकता, हरियाणवी भाषा क्षेत्र मे उनके प्रभाव और समाज मे उनकी गहरी पहुँच निश्चित तौर पर शोध पर विषय है।

(W)

(2) पंडित मांगे राम का जन्म सिसाना जो कि अब
सोनीपत जिले के अंतर्गत आता है 1905 मे
हुआ। उनके पिता का नाम अमर सिंह व
माता का नाम धरमो देवी था। मांगे राम
के चार भाई - टीकाराम, हुकमचन्द, चंदरभान
और रामचन्द्र तथा दो बहनें - नौरंगदे और
चंद्रपति थी। पंडित मांगे राम अपने भाई
बहनें मे सबसे बड़े थे।

मांगे राम के नाना पंडित लखमीचन्द या
उदमीराम गाँव पाणची, अच्छी जमीन -
जायदाद के मालिक थे। परन्तु उनकी कोई
संतान नहीं थी इसलिए नाना ने
पंडित मांगे राम को गोद मे भी खेलाया
था और वे पाणची मे रहने लगे।

मांगे राम की स्कूली शिक्षा नहीं हुयी
परन्तु वे थोड़ा बहुत पढ़ना - लिखना जानते है
पंडित उदमीराम धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे
और उनके रची भजन शब्दों मे

S.D. MAHILA MAHAVIDYALYA

NARWANA (JIND)

(AFFILIATED TO CH. RANBIR SINGH UNIVERSITY, JIND)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि छात्रा **ANJU** रोल नं **3288220097** ने हिंदी विभाग द्वारा 'हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी' विषय में 30 घंटे की अवधि का 'सर्टिफिकेट कोर्स' उत्तीर्ण किया है। हम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

डॉ अनीता रानी
संयोजिका

सुश्री कांता जागलान
सहसंयोजिका

डॉ अंजना लोहान
प्राचार्या

S.D. MAHILA MAHAVIDYALYA

NARWANA (JIND)

(AFFILIATED TO CH. RANBIR SINGH UNIVERSITY, JIND)

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि छात्रा **JYOTI** रोल नं **3288220063** ने हिंदी विभाग द्वारा 'हरियाणवी संस्कृति में सांग, लोकगीत एवं रागनी' विषय में 30 घंटे की अवधि का 'सर्टिफिकेट कोर्स' उत्तीर्ण किया है। हम इनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

डॉ अनीता रानी	सुश्री कांता जागलान	डॉ अंजना लोहान
संयोजिका	सहसंयोजिका	प्राचार्या

रिपोर्ट

सनातन धर्म महिला महाविद्यालय में 24/04/2022 को हिन्दी विभाग द्वारा सर्टिफिकेट कोर्स का समापन करवाया गया। कोर्स का नाम "हरियाणवी संस्कृति में सांग लोकगीत एवं रागनी" था। इस कोर्स का आरम्भ 05/04/22 को करवाया गया। इस कोर्स की अवधि 30 घंटे की है। हिन्दी विभाग की प्रवक्ता डॉ० अनीता धाबड़ा व कांता जागलान ने विद्यार्थियों को हरियाणवी संस्कृति का परिचय देते हुए सांग व रागनी के बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर प्राचार्या डॉ० अंजना लोहान ने भी छात्राओं को मार्गदर्शन किया।

कोर्स के समापन पर छात्राओं को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।